आर्यासप्तति प्रश्नग्रंथ भू-भट्टोत्पल
— Edited with the commentary in
हिन्दी by श्री वासुदेवगुप्त दैवज्ञ वाचस्पति
— Edited by पं० सीताराम झा,
Benares, 2014 Vikram era.

(4)

श्री

आचार्यभट्टोत्पलप्रणीता

आ
र्या
स
प्त
तिः

प्रश्नग्रन्थ

टीकाकार

दैवज्ञवाचस्पति श्रीवासुदेवगुप्त

संशोधक

ज्यौतिषाचार्य-तीर्थ-श्रीसीतारामझा

2939

श्री गणेशायनमः

आचार्यभट्टोत्पलप्रणीता

आर्य्यासप्तति:

(प्रश्नग्रन्थ)

टीकाकार

दैवज्ञवाचस्पति श्रीवासुदेवगुप्त

संशोधक

ज्यौतिषाचार्य-तीर्थ-श्रीसीतारामझा

प्रकाशक—

श्री अन्नपूर्णाप्रकाशन

काशी
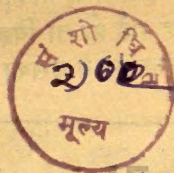
प्रथम संस्करण | मूल्य— | पांच आने
सं० २०१४ | | एक... पैसे।

भूमिका

जन्माङ्ग या प्रश्नसमय से मनुष्यों के शुभाशुभ फलका आदेश करना ही ज्यौतिषशास्त्र का मुख्य प्रयोजन है, जिसके अनेक आचार्यों द्वारा रचित अनेक ग्रन्थ हैं । उनमें एक ग्रन्थ वराहमिहिरात्मज दैवज्ञ पृथुयशा का केवल ५६ श्लोकमें 'षट्पञ्चाशिका' नामक जगत् प्रसिद्ध है । उसमें कुछ त्रुटि देखकर फलित ज्यौतिषोद्धारक-दैवज्ञ भट्टोत्पल ने समस्त प्रश्नग्रन्थों का सारभाग- केवल ७० आर्या छन्दों में समाविष्टकर 'आर्यासप्तति' नामक ग्रन्थ लिखकर जगत् का परम उपकार किया, किन्तु इसकी भाषाटीका नहीं होने से सकल साधारण जन के लिये दुरूहसा समझकर मैंने इसकी राष्ट्रभाषा हिन्दी में सरल टीका लिखकर प्रकाशित करवाया है । आशा है सुजन-समाज इसको अपनाकर लाभ उठायगा ।

इसकी टीका करने में राजस्थानान्तर्गत जैनपुरवासनिवासी दैवज्ञमार्तण्ड पं० श्रीप्रहलादशर्माजी ने यथास्थल अपने उचित परामर्श द्वारा सहायता की तदर्थ मैं उनका कृतज्ञ हूँ ।

अन्त में निवेदन है कि इसमें कुछ त्रुटि या प्रमादवश अशुद्धि रह गई हो तो विज्ञजन सूचित करने की कृपा करें-ताकि-अग्रिम संस्करण में उसका सुधार कर दिया जाय ।

विनीत—

वासुदेवगुप्त

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

आचार्यभट्टोत्पलप्रणीता

आर्यासप्ततिः ।

मंगलाचरण—

रविशशिकुजबुधगुरुसित, रविजगणेशान्प्रणम्य भक्त्यादौ ।
वक्ष्येऽहं स्पष्टतरं, प्रश्नज्ञानं हिताय दैवविदाम् ॥ १ ॥

मैं (भट्टोत्पल)--सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि इन नवग्रहों के सहित श्रीगणेशजी को भक्तिसहित प्रणाम करके दैवज्ञों के हितार्थ अत्यन्त स्पष्टरूप प्रश्नज्ञान को कहता हूँ ॥१॥

प्रश्नोत्तर कहने का अधिकारी—

दशभेदग्रहगणितं, जातकमवलोक्य निरवशेषमपि ।
यः कथयति शुभमशुभं, तस्य न मिथ्या भवेद्वाणी ॥२॥

दीप्त आदि अवस्थाओं से १० दसप्रकार के ग्रहों के गणित तथा समस्त जातक ग्रन्थों को सम्यक् अवलोकन करके जो जन्म-वर्ष वा प्रश्नलग्न से शुभ या अशुभ फल को कहता है उसका बचन कभी मिथ्या नहीं हो सकता है ॥२॥

वि०—दीप्त आदि अवस्थाओं के लक्षण—

(१) अपने उच्च और मूलत्रिकोण में रहने से ग्रह दीप्त, (२) अपने गृह में स्वस्थ, (३) मित्रगृह में मुदित, (४) शुभग्रह के वर्ग में शान्त, (५) देदीप्यमान किरणों से युक्त शक्त, (६) अन्यग्रहों से युद्ध में पराजितग्रह पीड़ित, (७) शत्रु के राश्यंश में दीन, (८) पापग्रह के गृह में खल, (९)

अपने नीच में भीत, और सूर्य सांनिध्य से अस्त होने से विकल कहलाता है।

प्रश्नकर्ता का कर्तव्य—

रम्यतरे भूभागे, सम्पूज्य ग्रहगणं सनक्षत्रम् ।
पश्चात्प्रश्नविधानं, कुर्याद्येनाप्नुयात्सिद्धिम् ॥३॥
प्रष्टा मणिकनकयुतैः, फलकुसुमै राशिचक्रमभ्यर्च्य ।
पृच्छेद्यथाभिलषितं, भक्त्या विनयान्वितः प्रश्नम् ॥४॥

प्रश्नकर्ता को चाहिये कि प्रथम भूमि को गोमयादि के लेप से पवित्र करके वहाँ अश्विन्यादि नक्षत्र सहित सूर्यादि नवग्रहों की पूजा करके पीछे प्रश्न करे जिससे उसके कार्यों की सिद्धि हो। पुनः यथाशक्ति मणि, सुवर्ण, रजत या फल पुष्पों से मेषादि द्वादश राशि के पूजन करके भक्ति और विनयपूर्वक अपने अभिलषित प्रश्न गणक (ज्योतिषी) से पूछे ॥३-४॥

उत्तरदाता गणक का कर्तव्य—

उदयनिमित्तैः प्रश्नीभूतैर्बहिरन्तःस्थितैः शकुनैः ।
वक्तव्यं शुभमशुभं, प्रष्टुस्तत्कालजातं यत् ॥५॥

उत्तरदेनेवाले गणक को चाहिये कि प्रश्नलग्न के कारणों एवं तत्काल उपस्थित बाहर या अभ्यन्तर के (आगे कहे हुए) शकुनों से प्रश्नकर्ता के होनेवाले शुभ या अशुभ फलों को कहे ॥५॥

प्रश्नसमय में शुभ शकुन—

दृङ्मनसोः प्रीतिकरं, प्रश्ने भूदर्शनं यदि प्रश्नात् ।
माङ्गल्यद्रव्याणां, भवति शुभं निर्दिशेत्तज्ज्ञः ॥६॥
हयगजवृषसिंहादेः पृच्छाकाले रुतं यदा भवति ।
दर्शनमथवैतेषां, शुभप्रदं विनिर्दिशेत्प्रश्ने ॥७॥

प्रश्नकाल में यदि नेत्र और मन के प्रसन्न करनेवाले भूमि या मङ्गलमय पदार्थों (दही आदिकों) का दर्शन उपलक्षण से मङ्गल

शब्दों का श्रवण हो तो ज्योतिषी को शुभ फल कहना चाहिए। यदि वा प्रश्नसमय में घोड़ा, हाथी, बैल, सिंह व्याघ्र आदि का शब्द सुनने में अथवा इनका दर्शन हो तो प्रश्न में शुभफल कहना चाहिये ॥६-७॥

तनुआदि भावों के द्वारा शुभाशुभ फल ज्ञान—

यो यो भावः प्रभुणा, युक्तो दृष्टोऽथवा प्रश्ने ।
गुरुबुधशुक्रैरेवं, वक्तव्यं तस्य तस्य फलम् ॥८॥
यस्माद्यस्माद्भवाद्, द्विद्वादशसप्तमस्थिताः सौम्याः ।
तस्मिँस्तस्मिन् वृद्धिर्दशमचतुर्थस्थितैस्तद्वत् ॥ ९ ॥

प्रश्नकाल में—लग्नादि द्वादशभावों में जो जो भाव अपने स्वामी या बुध, गुरु अथवा शुक्र से युक्त या दृष्ट हो तो उस भाव सम्बन्धी शुभ समझना चाहिये। तथा जिस भाव से २, १२, ७, ४ और १०वें स्थान में शुभग्रह हो उस भाव की पुष्टि होती है ॥८-९॥

वि०—यथा-धन (२) भाव में अपने स्वामी या बुधादि शुभग्रह की दृष्टि या योग हो तो धन की वृद्धि कहनी चाहिये। एवं अन्य भावों में भी समझना। इसलिये सिद्ध होता है कि रोग (६) मृत्यु (८) व्यय (१२) इन भावों में स्वामी या शुभग्रह की दृष्टि या योग हो तो अशुभ की वृद्धि होती है। अतः इन तीनों भावों से अतिरिक्त भावों में ही शुभग्रह के योग या दृष्टि से शुभफल होता है।

प्रश्नलग्नगत पाप और शुभग्रहों के फल—

द्विपदं चतुष्पदं वा, भवनं लग्नोपगं ग्रहः पापः ।
पश्यति तन्नाशकरो, ज्ञेयः सौम्यो विवृद्धिकरः ॥१०॥

द्विपद (मिथुन, कन्या, तुला, धनुकेपूर्वार्ध और कुम्भ) या चतुष्पद (मेष, वृष, सिंह, धनुकेउत्तरार्ध और मकरकेपूर्वार्ध) कोई भी राशि लग्न हो उसको पापग्रह देखता हो तो तज्जन्य शुभफल का नाशकारक और शुभग्रह की दृष्टि हो तो शुभफल को बढ़ानेवाला

समझना चाहिये ॥१०॥

अन्यकार्य सिद्धियोग—

लग्नाधिपतिः केन्द्रे, तन्मित्रं वा व्ययाष्टकेन्द्रेभ्यः ।
अन्यत्र गताः पापास्तत्रापि शुभं वदेत्प्रश्ने ॥११॥

प्रश्नलग्नेश या उसका मित्र यदि केन्द्र में हो तथा पापग्रह ८, १२ और केन्द्र से भिन्न स्थान में हो तो भी शुभफल (कार्यों की सिद्धि) कहना चाहिये ॥११॥

पञ्चमनवमोपगतैर्बुधगुरुशुक्रैर्यथेप्सितावाप्तिः ।
त्रिषष्ठलाभोपगतैः, क्षितिसुतरविसूर्यजैस्तद्वत् ॥१२॥

यदि बुध, गुरु और शुक्र ये तीनों ५ और ६ स्थान में रहे तथापि अभीष्ट पदार्थ का लाभ होता है । एवं मंगल, सूर्य, शनि ये यदि ३, ६, ११वें में हों तब भी कार्य की सिद्धि होती है ॥१२॥

प्रश्न से अशुभफल योग—

पापैर्लग्नोपगतैः, शरीरपीडां विनिर्दिशेत्कलहम् ।
सुखसंस्थैः सुखनाशं, गृहभेदं बन्धुविग्रहं कथयेत् ॥१३॥
अस्ते गमनविरोधः, कर्मस्थे कर्मणां नाशः ।
शुभदृष्टेः संयोगात्प्रष्टुः कृच्छ्राद्वदेत्सिद्धिम् ॥१४॥

प्रश्नलग्न में पापग्रह हों तो प्रश्नकर्ता के शरीर में कष्ट और मानसिक व्यथा कहनी चाहिये । यदि चतुर्थभाव में पापग्रह हो तो सुख का नाश, घर में भेद तथा बन्धुओं से क्लेश, यात्राप्रश्न में ७वें भाव में पापग्रह हो तो यात्रा में बाधा, कार्य सिद्धि प्रश्नादि में १० वें में पापग्रह हो तो कार्य का नाश कहना । यदि उसपर शुभग्रह की दृष्टि हो तो बहुत परिश्रम करने पर कार्य की सिद्धि होगी ऐसा कहना चाहिये ॥१३-१४॥

स्थानप्राप्ति, यात्रा, आगमन, द्रव्यलाभ, विजय-प्रश्न—

स्थिरराशौ लग्नगते, स्थानप्राप्तिं वदेन्न गमनं च ।
रोगोपशमं नाशं, द्रव्याणां च पराभवं नाऽत्र ॥१५॥
चरराशौ विपरीतं, मिश्रं वाच्यं द्विमूर्त्युदये ।
स्थिरवत्प्रथमेऽर्धे स्यादपरे चरराशिवत्सर्वम् ॥१६॥

प्रश्नसमय में लग्नमें स्थिरराशि हो तो स्थानलाभ के प्रश्न में स्थानलाभ कहना, यात्राप्रश्न हो तो यात्रा में विघ्न (यात्रा नहीं होगी) रोग सम्बन्धी को रोग का नाश, धन के प्रति हो तो धन की हानि और विजय सम्बन्धी प्रश्न हो तो पराभव (पराजय) नहीं अर्थात् विजय होगी ऐसा कहना चाहिए। यदि चरराशि लग्न हो तो इससे विपरीत (अर्थात् स्थान की प्राप्ति नहीं, यात्रा होगी, रोग का नाश नहीं, धनप्रश्न में धन का लाभ, विजय सम्बन्धी प्रश्न में पराजय) कहना चाहिये। द्विस्वभाव-लग्न हो तो मिश्र (लाभ हानि दोनों) फल अर्थात् लग्न के पूर्वार्ध में स्थिरराशि समान और उत्तरार्ध में चरराशि समान सब फल समझना चाहिये ॥१५-१६॥

शुभग्रहे लग्नगते, लग्ने वा सौम्यवर्गमायाते ।
ब्रूयादभिमतसिद्धिं, प्रष्टुस्स्थानान्तरप्राप्तिम् ॥१७॥

लग्नमें शुभग्रह या शुभग्रह के वर्ग (राशि आदि) हो तो प्रश्न-कर्ता के अभीष्ट कार्यों की सिद्धि कहनी चाहिए। तथा स्थान सम्बन्धी प्रश्न में अन्यस्थान की प्राप्ति कहनी चाहिये ॥१७॥

केन्द्रत्रिकोणसंस्थाः, सौम्याः पापास्त्रिषष्ठलाभेषु ।
संस्थाः सिद्धिं ब्रूयात्कार्याणां प्रोषितागमनम् ॥१८॥

प्रश्नलग्न से केन्द्र या त्रिकोण में शुभग्रह और ३, ६, ११वें भाव में पापग्रह हो तो कार्यों की सिद्धि तथा परदेशी का आगमन कहना चाहिये ॥१८॥

पुनः परदेशी के आगमन सम्बन्धी प्रश्न—

दुश्चिक्यधनसमेतौ, गुरुशुक्रावागमं न्द्रणाम् ।
बन्धूपगतावेतौ, गृहप्रवेशं क्षणात्कुरुतः ॥१६॥

प्रश्नलग्न से तृतीय और द्वितीय भावों में गुरु और शुक्र हों तो परदेशी का आगमन कहना, यदि ये दोनों (गुरु, शुक्र) चतुर्थभाव में हो तो परदेशी अतिशीघ्र घर में पहुँचेगा ऐसा कहना चाहिये ॥१६॥

लग्नाद् द्विद्वादशगौ; चन्द्राद्वा चन्द्रपुत्रभृगुपुत्रौ ।
मरणं लब्वागमनं, नास्तीति विनिर्दिशेत्प्रष्टुः ॥२०॥

प्रश्नकालिक लग्न या चन्द्रमा से २, १२ में बुध और शुक्र हो तो परदेशी का मरण या शीघ्र आगमन नहीं (अर्थात् अति विलम्ब से) कहना चाहिये ॥२०॥

शत्रु के आगमन सम्बन्धी प्रश्न—

स्थिरराशिस्थे चन्द्रे, चरलग्ने तन्नवांशके शीघ्रम् ।
आयाति रिपुः सबलो, विपर्यये त्वन्यथा वाच्यम् ॥२१॥

प्रश्नसमय में यदि चन्द्रमा स्थिरराशि में हो और चरलग्न में चरनवांश में हो तो दलबलसहित शत्रु शीघ्र आनेवाला है, इससे विपरीत (अर्थात् चरराशि में चन्द्र और स्थिरलग्न में स्थिरनवांश) हो तो शत्रु का आगमन नहीं ऐसा कहना चाहिये ॥२१॥

द्विशरीरे हिमरश्मावुदयगते स्थिरगृहे क्षणाच्छत्रुः ।
लब्धबलोऽपि विनश्यति, गुरुबुधसितसंयुते षष्ठे ॥२२॥

प्रश्नसमय द्विस्वभाव राशि में चन्द्रमा और स्थिर लग्न हो तथा षष्ठ (रिपु) भाव में बुध, गुरु और शुक्र हो तो प्रबल शत्रु भी क्षणमात्र में नष्ट हो जाता है ॥२२॥

पापैः सुतशत्रुगतैः, शत्रुर्मार्गान्निवर्ततेऽवश्यम् ।
संप्राप्तोऽपि चतुर्थे, वाश्वेव निवर्तते भग्नः ॥२३॥

पाप ग्रह यदि ५ या ६ भाव में हो तो शत्रु मार्ग से ही लौट जायगा। तथा ४ भाव में पापग्रह हो तो शत्रु शीघ्र ही पराजित होकर लौटेगा ऐसा कहना चाहिये ॥२३॥

जय, पराजय, सन्धि प्रश्न—

कर्कटवृश्चिकघटधर, मीना हिबुकोपगाः शुभैर्दृष्टाः ।
शत्रोः पराजयकरा, वृषाजचापैः प्रयाति रिपुः ॥२४॥

प्रश्नलग्न से चतुर्थभाव में कर्क, वृश्चिक, कुम्भ या मीन राशि हो उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो शत्रुओं की पराजय एवं यदि चतुर्थभाव में वृष, मेष या धनु राशि हो तो शत्रु शीघ्र लौट जायगा कहना चाहिये ॥२४॥

नवमाद्ये चक्रदले, विज्ञेया यायिनस्तृतीयादौ ।
पौराः शुभसंयुक्ते, भागे विजयोऽपरे भङ्गः ॥२५॥

नवमभाव से द्वितीय भाव तक ६ राशि यायी (चढ़ाई करने वाले) और तृतीयसे अष्टम तक ६ राशि स्थायी (अपने स्थान में रहनेवाले) के विभाग माने गये हैं। जिसके विभाग में शुभग्रह हो उसकी विजय तथा जिस भाग में पापग्रह हो उसकी पराजय एवं शुभ और पाप दोनों भाग में हो तो दोनों में सन्धि कहनी चाहिये ॥२५॥

सौम्यैर्नरराशिगतैर्लग्ने लाभे व्ययेऽथवा सन्धिः ।
भवति नृपाणां प्रवदेदतोऽन्यथा विपर्ययो ज्ञेयः ॥२६॥

द्विपदराशि में शुभग्रह होकर यदि लग्न, ११ और १२ वें भाव में हो तो दोनों दल में सन्धि कहना। इससे अन्यथा हो तो विपरीत फल (दोनों में किसी की जय पराजय नही होकर सदा शत्रुता बनी रहेगी ऐसा) कहना चाहिये ॥२६॥

रोगी के सम्बन्ध में सुख दुख का प्रश्न—

उपचयसंस्थश्चन्द्रः, सौम्याः केन्द्रत्रिकोणनिधनस्थाः ।
लग्ने वा शुभदृष्टे, सुखितस्तत्रातुरो वाच्यः ॥२७॥
परिपूर्णतनुश्चन्द्रो, लग्नोपगतो निरीक्षितो गुरुणा ।
गुरुशुक्रौ केन्द्रे वा, निपीडितार्त्तोऽपि सुखितः स्यात् ॥२८॥

लग्न से ३, ६, १०, ११ वें भाव में क्षीण चन्द्रमा, या केन्द्र त्रिकोण और ८ में शुभग्रह हो अथवा लग्न पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो रोग से पीड़ित व्यक्ति स्वस्थ और सुखी होगा । तथा पूर्णचन्द्रमा लग्न में शुभग्रह से दृष्ट हो वा केन्द्र में गुरु और शुक्र हो तो आर्तअवस्था में रहनेवाला भी सुखी होगा ऐसा कहना चाहिये अन्यथा (उक्त योग न हो तो) रोगी पीड़ित रहेगा कहना ॥२७-२८॥

विवाह (स्त्री लाभ) प्रश्न—

जामित्रोपचयगतः, शीतांशुर्जीववीक्षितः कुरुते ।
स्त्रीलाभं पापयुतो-ऽवलोकितो वापि तन्नाशम् ॥२९॥

लग्न ७, ३, ६, १०, ११ वें भाव में चन्द्रमा हो उसपर गुरु की दृष्टि रहे तो अवश्य विवाह (स्त्रीलाभ) होगा, यदि उसी स्थान में चन्द्रमा पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो स्त्रीलाभ नहीं होगा ऐसा कहना चाहिये ॥२९॥

दुश्चिक्यतनयसप्तम-रिपुलाभगतःशशी विलग्नर्क्षात् ।
गुरुरविसौम्यैर्दृष्टो, विवाहदः स्यात्तथा सौम्याः ॥३०॥
केन्द्रत्रिकोणगा वा, सप्तमभवनं शुभग्रहस्य यदि ।
तज्जातीयां लभते, पापर्क्षे विगतरूपां च ॥३१॥

यदि लग्न से ३, ५, ७, ६, ११ वें भाव में चन्द्रमा हो उसपर गुरु, रवि और बुध की दृष्टि हो अथवा शुभग्रह केन्द्र त्रिकोण में हो तो अवश्य विवाह (स्त्रीलाभ) होगा । प्रश्नलग्न से सप्तमभाव में शुभग्रह की राशि (शुभग्रह के अधिक वर्ग) हो तो तदनुसार सुशीला-गुणवती स्त्री

का लाभ, तथा सप्तम भाव में पापग्रह की राशि हो तो दुःशीला, कुरूपा स्त्री का लाभ कहना चाहिये ॥३०-३१॥

स्त्री के गर्भ तथा पुत्र-कन्या सम्बन्धी प्रश्न—

पञ्चमलाभोपगतैः, सौम्यैः स्त्रीगर्भिणीति वक्तव्यम् ।
जीवरविलग्नचन्द्रा, विषमर्क्षगता नरं कुर्युः ॥३२॥
समराशिगताः कन्यां, मिश्रोपगते बलाधिकाद्वाच्यम् ।
सौरो विषमर्क्षगतो, लग्नात्पुञ्जन्मदः प्रोक्तः ॥३३॥
विषमर्क्षे गुरुशुक्रौ, बलिनौ पुंजन्मदः प्रश्ने ।
गुरुभौमशीतकिरणा, युग्मर्क्षगताः स्त्रियं कुर्युः ॥३४॥

(अमुक स्त्री को गर्भ है यां नहीं इस प्रश्न में) लग्न से ५, ११ वें भावमें शुभग्रह हो तो स्त्री गर्भवती है अन्यथा नहीं ऐसा कहना। गर्भिणी के पुत्र या कन्या सम्बन्धी प्रश्नमें-यदि गुरु, रवि लग्न और चन्द्रमा इनमें अधिक या चारों विषम राशि में हो तो पुत्र का जन्म, तथा ये ही चारों यदि समराशि में हों तो कन्या का जन्म कहना चाहिये। यदि इनमें दो विषमराशिमें और दो समराशि में हों तो जिनके बल अधिक हों वैसा फल (विषमर्क्षवाले का अधिक बल हो तो पुत्र, समराशिवाले का अधिक वल हो तो कन्या का जन्म) कहे । शनि यदि लग्न से विषम भाव में हो तो पुत्र तथा गुरु और शुक्र ये दोनों बली होकर विषम राशि में हो तो पुत्र जन्म यदि गुरु, मङ्गल और चन्द्रमा ये समराशिमें हो तो कन्या का जन्म होगा ऐसा कहना चाहिये ॥३२-३४॥

ग्रहों के रस तथा भोजन सम्बन्धी प्रश्न—

कटुको लवणस्तिक्तो, मिश्रो मधुराम्लकौ कषायश्च ।
सूर्यादितो रसाःस्युर्लग्नं बलवाँश्चतुष्टयगः ॥ ३५ ॥
पश्यति यस्तत्काले, लग्नगतस्य ग्रहस्य यः प्रोक्तः ।
स रसः प्रष्टुर्वाच्यो, भोजनकाले स्वयं क्रमादपरः ॥३६॥

सौम्यर्क्षगतस्य शुभं, पापर्क्षगतस्य नीरसं वाच्यम् ।
विपरीतगतेरग्रे, प्राप्तमपि न भक्षयेत्प्रोक्तम् ।।३७।।

सूर्य का कड़ुआ (मिर्चादि), चन्द्रमा का लवण, मङ्गल का तिक्त (नीम आदि), बुध का मिश्रित (अनेक रस मिला), गुरु का मधुर, शुक्र का अम्ल और शनि का कषाय (कसैला) रस समझना। "मेरे भोजन में मुख्य रस कौन था या होगा ?" ऐसे प्रश्न में—केन्द्रगत ग्रहों में जो ग्रह बली होकर लग्न को देखता हो, अथवा जो ग्रह लग्न में हो उस ग्रह का रस भोजन में प्रधानरूप, अन्य ग्रहों के बलानुसार अप्रधानरूप से भोजन में रस कहना चाहिए। वह बलीग्रह यदि शुभग्रह की राशि में हो तो उत्तम (स्निग्ध) तथा पापग्रह की राशि में हो तो रसहीन (सूखा) भोजन कहना । यदि वह (लग्नद्रष्टा) ग्रह वक्रगति हो तो उक्तरस आगे में आया हुआ भी भोग्य नहीं होता है ।।३५-३७।।

शुभाशुभ स्वप्नदर्शन प्रश्न—

रविलग्ने दीप्ताग्नि,र्लोहितवसनानि दर्शनं नृपतेः ।
शिशिरकिरणे तु नारी, सितकुसुमश्वेतवस्त्ररत्नानि ।।३८।।
भौमे सुवर्णविद्रुम, रक्तस्रावं तथार्द्रमांसमपि ।
खे गमनं शशिपुत्रे, जीवे सहबन्धुभिर्योगः ।। ३९ ।।
जलसन्तरणं शुक्रे, तुङ्गारोहं वदेत्पतङ्गसुते ।
लग्नस्थे वक्तव्यं, मिश्रैर्मिश्रं तथा प्रश्नम् ।।४०।।

कैसा स्वप्न देखा या देखूंगा ? ऐसे प्रश्न में यदि लग्न में रवि हो तो-स्वप्न में प्रज्वलित अग्नि, लाल वस्त्रादि और राजा का दर्शन कहना, चन्द्रमा रहे तो स्त्री, श्वेत पुष्प, श्वेत वस्त्र और रत्न का दर्शन, मङ्गल से-सुवर्ण, मूंगा, लाल पदार्थ शोणितयुक्त मांस का दर्शन, बुध हो तो-आकाश में उड़ना, गुरु हो तो इष्ट मित्रों का समागम, शुक्र हो तो-जल में क्रीड़ा और शनि होने से-ऊँचे पर चढ़ना यदि लग्न में अनेक ग्रह हों तो उन सबों के उक्तफल स्वप्न में कहना चाहिए ।।३८-४०।।

रिपुनीचोपगतैर्दुःस्वप्नं विबलैर्विनिर्दिशेत् खेटैः ।
रविकिरणमुषितदेहैः, प्रष्टुः स्वप्ने वदेदेवम् ॥४१॥

उक्त लग्नगत ग्रह यदि शत्रुगृह या नीच राशि में हो तो दुःस्वप्न (भयप्रद-अशुभ) यदि सूर्य सांनिध्य से अस्त हो तो भी ऐसा ही (अशुभ) फल कहना चाहिए ॥४१॥

स्वप्न देखा है या नहीं ऐसा प्रश्न—

रविलग्ने शशिदृष्टे, रविशशिनौ सप्तमे विलग्नाद्वा ।
स्वप्नो दृष्टः प्रवदेत्प्रष्टुर्लग्नग्रहान्तरात्कालः ॥४२॥

रवि या लग्न पर चन्द्रमा की दृष्टि हो अथवा लग्न से सप्तम भाव में रवि या चन्द्र होने से स्वप्न देखा है अन्यथा नहीं ऐसा कहना और लग्न तथा ग्रह के अन्तरांशपरसे स्वप्न का काल समझना चाहिए ॥४२॥

वि०—३० अंशमें लग्नराशि का उदयमान तो लग्न और ग्रह के अन्तरांश में क्या इस अनुपात से स्वप्न के काल का ज्ञान करना ।

वृष्टि (वर्षा) प्रश्न—

कर्कटमृगझषकन्या, लग्नभगाः शशधरो विलग्नगतः ।
भृगुजो वा वृष्टिकरस्तथैवान्य केन्द्रगो वदेत्प्राज्ञः ॥४३॥
सौम्यैर्दृष्टः प्रचुरं, पापैश्च विलोकितो जलं स्वल्पम् ।
वर्षाप्रश्ने कुरुते, जलसंज्ञकदर्शनादेवम् ॥४४॥
रविशशिनोः सप्तमगौ, भृगुरविजौ वेश्मगौ विलग्नाद्वा ।
द्वित्रिनिधनस्थितौ वा, वर्षासमये जलप्रदौ भवतः ॥४५॥
जलराशिगताः सौम्याः, कण्टकधनसंस्थिता वा स्युः ।
उदयगते वा चन्द्रे, पृच्छासमये वदेद् वृष्टिम् ॥४६॥

वर्षासम्बन्धी प्रश्नलग्न में कर्क, मकर, मीन या कन्या लग्न हो उसमें चन्द्रमा या शुक्र हो तो वृष्टिकारक, अथवा चन्द्रमा या शुक्र अन्य

केन्द्रमें शुभग्रह से दृष्ट हो तो अत्यधिक वृष्टि, तथा पापग्रह से दृष्ट हो तो स्वल्प वृष्टि कहनी चाहिये। एवं प्रश्नकाल में जल संज्ञक जल सम्बन्धी (मछली, मोती, शंख आदि) वस्तु के दर्शन से भी वृष्टि होगी ऐसा कहना। रवि या चन्द्रमा से सप्तमभाव में वा लग्न से २, ३ या ८वें भावमें शुक्र और शनि हो तो वर्षासमय में प्रश्नकरने से शीघ्र वृष्टि होगी ऐसा कहना। यदि शुभग्रह जलचर राशिमें या १, ४, ७, १०, २ भाव में हो तथा लग्नमें चन्द्र हो तो वर्षासमयमें वृष्टि अवश्य होगी ऐसा समझना ॥ ४३--४६ ॥

प्रश्नलग्न से चोर आदि की आकृति का ज्ञान —

मेषवृषभघटमीना, ह्रस्वा नृयुग्मकर्किमकरधनूंषि।
मध्या हरियुवतितुलाऽलयः स्मृता लग्नगा दीर्घाः ॥४७॥

मेष, वृष, कुम्भ और मीन लग्न में हो तो चोर या जातक आदि के देह का आकार ह्रस्व (छोटा-नाटा), मिथुन, कर्क, मकर, धनु लग्नगत हो तो मध्यम और सिंह, कन्या, तुला या वृश्चिक लग्न हो तो दीर्घ आकार समझना चाहिए ॥४७॥

मूकप्रश्न में जीव आदि ज्ञान—

बलिनौ केन्द्रोपगतौ, रविभौमौ धातुकारकौ प्रश्ने।
बुधसौरी मूलकरौ, शशिगुरुशुक्राः स्मृता जीवाः ॥४८॥

प्रश्नसमय में—केन्द्रमें या सबसे बली रवि वा मङ्गल हो तो धातु (सोना, चाँदी आदि), बुध या शनि हो तो मूल (पुष्प-फलादि), तथा चन्द्र, गुरु अथवा शुक्र केन्द्र में या बली हो तो जीव (जन्तु) सम्बन्धी प्रश्न समझना चाहिए ॥४८॥

प्रश्नसम्बन्धी पदार्थ के वर्णज्ञानार्थ ग्रहों के वर्ण—

रक्तौ सूर्यावनिजौ, श्वेतौ शशिभार्गवौ विनिर्दिष्टौ।
हरितो बुधः प्रदिष्टः जीवः पीतः शनिस्तथा कृष्णः ॥४९॥

सूर्य और मङ्गल का वर्ण-रक्त, चन्द्र और शुक्र का-श्वेत, बुध का-हरा, गुरु का-पीत (पीला) और शनि का वर्ण कज्जल (काला) है ॥४९॥

ग्रहों के शरीर स्वरूप—

चतुरस्रोऽर्को भौमो, वृत्तः सुषिरेन्दुरिन्दुजो दीर्घः ।
दीर्घः सुतनुः शुक्रो, जीवः परिवर्त्तुलो ज्ञेयः ॥५०॥
अतिसूक्ष्मो भृगुतनयो, दीर्घः सुषिरान्तरोऽर्कतनयः स्यात् ।
हृतनष्टादौ प्रश्ने, द्रव्यं सबलाद् ग्रहात्प्रवदेत् ॥५१॥

सूर्य और मङ्गल चतुरस्र (तुल्य लम्बाई चौड़ाई), चन्द्रमा गोलाकृति और मध्य में छिद्रवाला, बुध दीर्घ, शुक्र दीर्घ, कृश और सुन्दर देहवाला, गुरु वर्तुल, और शनि लम्बा और छिद्रयुक्त देहवाला है। चोरी, खोई हुई वस्तु तथा चोर या जातकादि के रूप और आकृति आदि प्रश्नसमय में बलीग्रह सदृश समझना ॥५०-५१॥

मूकप्रश्न में लग्नराशिवश-धातु आदि चिन्ता—

मेषालिसिंहलग्ने, कुजार्कयुक्ते निरीक्षितेऽप्यथवा ।
धातोश्चिन्तां प्रवदे, द्युगघटकन्यामृगैर्लग्नैः ॥५२॥
बुधरविजयुतैर्मूलं, वृषतुलमृगमीनचापकर्कटकैः ।
चन्द्रगुरुशुक्रयुक्तै, र्दृष्टैर्जीवो विनिर्देश्यः ॥५३॥

लग्न में मेष, वृश्चिक या सिंह राशि हो या लग्न में मङ्गल या सूर्य का योग अथवा दृष्टि हो तो मूकप्रश्न में धातु की चिन्ता, मिथुन, कुम्भ, कन्या या मकर लग्न हो वा बुध या शनि से युत दृष्ट हो तो मूल की चिन्ता तथा वृष, तुला, धनु, मीन या कर्क लग्न हो अथवा लग्न में चन्द्र, गुरु या शुक्र का योग हो तो प्रश्नकर्त्ता के मन में जीव सम्बन्धी की चिन्ता है, ऐसा कहना ॥५२-५३॥

चोर ज्ञान प्रश्न—

स्थिरलग्ने स्थिरभागे, वर्गोत्तमकांशके हृतं द्रव्यम् ।
आत्मीयेनेति वदेच्चरराशौ परजनेन हृतम् ॥५४॥

चोर घर का है या बाहर का ऐसे प्रश्न में यदि लग्न में स्थिर राशि, स्थिरराशि के नवमांस या वर्गोत्तम नवमांस हो तो घर का व्यक्ति ही चोर है तथा चरराशि, चरनवमांस हो तो बाहर के व्यक्ति को चोर समझना चाहिये। यदि लग्न में द्विस्वभाव राशि हो तो घर के समीप रहनेवाला (पड़ोसी) को चोर समझना चाहिये ॥५४॥

हृतनष्ट वस्तु का स्थान और चोर की जाति आदि ज्ञान—

द्विशरीरे लग्नगते, गृहनिकटनिवासिना च हृतम् ।
स्थिरराशौ तत्रस्थं, चरराशौ निर्गतं बहिर्भवनात् ॥५५॥
द्विशरीरे गृहबाह्ये, भूमिगतं विनिर्दिशेद् द्रव्यम् ।
लग्नस्वामिसमानं जातिं रूपं च तस्करस्य वदेत् ॥५६॥

यदि प्रश्नलग्न में स्थिरराशि हो तो हृत या नष्टवस्तु घर में ही समझना, चरराशि हो तो बाहर चला गया यदि द्विस्वभावराशि हो तो घर के समीप में ही पृथिवी में गाड़ा हुआ कहना। तथा लग्नेश के समान ही चोर की जाति, स्वरूप आदि समझना चाहिये ॥५५-५६॥

चोरी हुई वस्तु की प्राप्ति और दिशा का ज्ञान—

पूर्णशरीरश्चन्द्रो, लग्नोपगतः शुभग्रहो वा स्यात् ।
सौम्यावलोकितं वा, भवनं शीर्षोदयं लग्ने ॥५७॥
लाभगतैर्वा सौम्यै-राश्वेव धनस्य विनिर्दिशेल्लब्धिम् ।
लग्नाद् द्वितीयभवने, तृतीयके वा शुभग्रहैर्युक्ते ॥५८॥
प्रष्टा लभते वित्तं, सौम्यैर्बन्धुस्तषष्ठदशमगतैः ।
केन्द्रस्थैर्दिग्वाच्या ग्रहैर्विलग्नादसंभवे वाऽत्र ॥५९॥

प्रश्नलग्न में पूर्णचन्द्र वा अन्य शुभग्रह हो या लग्न पर शुभग्रह की दृष्टि हो अथवा शीर्षोदयराशि हो किंवा लाभ (११) भाव में शुभग्रह

हो अथवा २, ३, ४, ७, ६ और १० इन भावों में शुभग्रह हो तो हृत (चोरी हुई) वस्तु की प्राप्ति होगी ऐसा कहना । केन्द्रगत ग्रहों की दिशा में बहुत ग्रह केन्द्र में हो तो बलीग्रह की दिशा में यदि केन्द्र में ग्रह न हो तो लग्नराशि की दिशा में हृतवस्तु गई है, ऐसा बताना चाहिये ॥५७-५६॥

गर्भ-प्रसव-नष्ट वस्तु के लाभ आदि में काल ज्ञान—

उदयोपगतं राशिं, तंल्लिप्तीकृत्य लिप्तिका गुणयेत् ।
छायाङ्गुलैः पृथक्स्था, हृत्वा मुनिभिस्तथा शेषम् ॥६०॥
ग्रहगुणकारो ज्ञेयो, दैवविदा पंचविंशतिः सैका ।
मनवो गोऽष्टौ त्रितयं, भवाश्च सूर्यादितो ज्ञेयाः ॥६१॥
गुणयित्वैवं प्राग्वद्, शुभस्य शेषे भवेदुदयः ।
कार्यस्याप्तिः प्रष्टु-र्वक्तव्या नेतरैर्भवति ॥६२॥
गुणकारैक्यविभक्तः, कार्यः सूर्यादिगुणकसंशुद्धः ।
यस्य न शुद्धयति वर्गो, ज्ञेयस्तद्वर्गगः कालः ॥६३॥

प्रश्नलग्न के राश्यादि को कलात्मक करके तात्कालिक १२ अङ्गुल शङ्कु की छायाङ्गुल प्रमाण से गुना करने से जो कलापिण्ड बने उसमें ७ का भाग देकर १ आदि शेष में रवि आदि ग्रहों के गुणक क्रमसे ५।२१।१४।६।८।३।११ समझना । इस प्रकार जिस ग्रह के गुणक प्राप्त हो उसको कालपिण्ड से गुणाकर गुणनफल में ७१ से भाग देवे और जो शेष बचे उसमें उक्त रव्यादि ग्रहों के गुणकों को क्रमसे घटावे। जिस ग्रह का गुणक न घटे उस ग्रह का उदय समझना । इस प्रकार यदि शुभग्रह का उदय हो तो कार्य की सिद्धि (प्राप्ति) निश्चय होगी ऐसा कहना, यदि पापग्रह का उदय हो तो सिद्धि नहीं होगी कहना चाहिये ॥६०-६३॥

आरदिवाकरशेषे, दिवसाः पक्षाश्च भृगुशशिनोः ।
गुर्वंवशेषे मासा, ऋतवः सौम्ये शनैश्चरेऽब्दाः स्युः ॥६४॥
आधानेऽर्थप्राप्तौ, गमनागमने पराजये विजये ।
रिपुनाशे वा कालं, पृच्छायां निश्चितं ब्रूयात् ॥६५॥

उपरोक्त रीति से उदयकाल में मङ्गल और सूर्य के शेष तुल्य दिन शुक्र और चन्द्रमा के शेष तुल्य पक्ष, गुरु के मास, बुध के ऋतु और शनि के शेष तुल्य वर्ष समझना । गर्भाधान, लाभालाभ, गमनागमन, जय पराजय आदि में इस प्रकार समय का निश्चय करना चाहिये ।६४-६५।

उदाहरण—प्रश्नलग्न १ । ५ । २० । २५ और इष्टकाल में छायाङ्गुल=१० है, तो उक्त रीति से लग्न की कला २१२०।२५ को छायाङ्गुल १० से गुनाकर कलापिण्ड २१२०४।१० इसमें ७ के भाग देने से शेष १ । १० गतकला १ वर्तमान द्वितीयकला है, अतः रव्यादि गणना से दूसरा चन्द्रमा हुआ उसका गुणकाङ्क २१ प्राप्त हुआ, इस गुणकाङ्क से फिर कलापिण्ड २१२०४ । १० को गुना करके ४४५२८७।३० इसमें सब ग्रहों के गुणक योग ७१ के भाग देने से शेष ४६।३० इसमें रवि, चन्द्र और मङ्गल (५।२१।१४=४०) के योग को घटाने से शेष ६।३० इसमें बुध का उक्त गुणकाङ्क (६) नहीं घटता है, अतः वर्तमान बुध का उदय हुआ । बुध शुभग्रह है इसलिये कार्य की सिद्धि होगी किन्तु बुध के शेष तुल्य ऋतु में अर्थात् ६ ऋतु के पश्चात् (दो मास=१ ऋतु) कार्य सम्पन्न होगा ।

एक समय में अनेक प्रश्न और उनका ज्ञान—

अकचटतपयशवर्गा, रविकुजसितसौम्यजीवसौराणाम् ।
चन्द्रस्य च निर्दिष्टाः, प्रश्ने प्रथमोद्भवैर्वर्णैः ॥६६॥
ज्ञात्वा तस्माल्लग्नं, प्राज्ञः शुभाशुभं वदेत्प्रष्टुः ।
वर्गादिमध्यमान्त्यै, वर्णैः प्रश्नोद्भवैर्विषमम् ॥६७॥

रात्रौ लग्नं प्रवदे-च्छेषैर्युग्मं कुजज्ञजीवानाम् ।
सितरविजयोश्च नैवं, रविशशिनोरेकराशित्वात् ।।६८।।
तस्मात्प्राग्वत्प्रवदेत्, पृच्छासमये शुभाशुभं सर्वम ।
कालस्य च विज्ञाने, चिन्त्यं चैतद् बहुप्रश्ने ।।६६।।

अ-वर्ग का रवि, क-मङ्गल, च-शुक्र, ट-बुध, त-गुरु, प-शनि और य तथा श-वर्ग का चन्द्रमा स्वामी है । प्रश्नकर्त्ता के मुख से प्रथम जिस वर्ग का वर्ण उच्चारण हो उस ग्रह की राशि लग्न, उनमें वर्ग के (३, १, ५) विषम अक्षरो से विषम राशि लग्न तथा यदि सम अक्षर हो तो सम राशि को लग्न मानना यह-अर्थात् सिद्ध होता है इस प्रकार मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि इन ग्रहों के दो-दो राशि होने के कारण प्रश्नलग्न दो प्रकार के हो सकते है । परञ्च रवि और चन्द्र की एक ही राशि होने के कारण लग्न भी एक ही होता है । इस प्रकार लग्न का ज्ञान करके पूर्वोक्तविधि से शुभाशुभ फल और काल का निश्चय करना चाहिये । इस प्रकार (प्रश्न के आदि अक्षर पर से) लग्न की कल्पना तभी करनी चाहिये जब कि अनेक प्रश्न हों अन्यथा (एक प्रश्न में) इष्टकाल से ही लग्न साधन कर फल कहना ॥ ६६-६६ ॥

ग्रन्थालङ्करण—

भट्टोत्पलेन शिष्याऽनुकम्पयालोक्य सर्वशास्त्राणि ।
आर्य्यासप्तत्येदं प्रश्नज्ञानं समासतो रचितम् ।।७०।।

(मैं भट्टोत्पल) ने शिष्यजनों पर अनुग्रहबुद्धि से समस्त ज्यौतिष प्रश्नग्रन्थों को देखकर उनमें से सारभाग लेकर केवल ७० आर्या छन्दो में अति संक्षेप से इस प्रश्नग्रन्थ की रचना की ।।७०।।

नवनगवसुशशितुल्ये शाकवर्षे मार्गसितपक्षे ।
आर्या सप्ततिभाषा-टीका रचिताऽत्र वासुदेवेन ।।

इति—काशी-नगरस्थ-श्रीनागरमलगुप्तात्मज-दैवज्ञवाचस्पति-श्रीवासुदेवगुप्त-कृत-आर्य्यासप्तति-भाषाटीका समाप्ता ।

प्रकाशकीय विज्ञप्ति—

वर्तमान समय में लोग थोड़े समय और थोड़े परिश्रम में ज्यौतिष शास्त्र के सार को समझना चाहते हैं। किन्तु इस प्रकार के सरल ग्रन्थों की उपलब्धि नहीं होने से हताश ही होना पड़ता है।

इस अभाव को दूर करने के लिये ही काशीस्थ श्री अन्नपूर्णा प्रकाशन ने ज्यौतिषशास्त्रमर्मज्ञों द्वारा ज्यौतिष सम्बन्धी सभी विषय को राष्ट्रभाषा हिन्दी में सरल अर्थ और उदाहरणों के सहित क्रमशः प्रकाशितकरने का निश्चय किया है। आशा है इस लोकोपकारक कार्य में सुजन समाज हमारी यथायोग्य सहायता करके उत्साहित करेंगे—जिससे कि हम अधिकाधिक जनता की सेवा करने की क्षमता प्राप्त करें।

निवेदक—
व्यवस्थापक
श्री अन्नपूर्णा प्रकाशन
काशी।